



કોટપૂતલી-બહરોડ



શ્રી નરેન્દ્ર મોદી
પ્રધાનમંત્રી

શ્રી ભજનલાલ શર્મા
મુખ્યમંત્રી, રાજ્યાંદ

પંચ ગૌરવ

જિલા : કોટપૂતલી-બહરોડ



જિલા પ્રશાસન, કોટપૂતલી-બહરોડ

#हर_घर_खुशहाली



#आपणों_अग्रणी_राजस्थान



भजनलाल शर्मा
मुख्यमंत्री, राजस्थान

संदेश

राजस्थान को अपनी भौगोलिक विविधताओं, प्राकृतिक संपदा और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के लिए जाना जाता है। यहां हर जिले की अपनी एक विशिष्ट पहचान है, जो वहां की उपज, हस्तशिल्प, औद्योगिक उत्पाद, खनिज संपदा और पर्यटन स्थलों में परिलक्षित होती है। इन विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए राज्य सरकार ने पंच-गौरव कार्यक्रम की शुरूआत की है, जिसका उद्देश्य प्रत्येक जिले की क्षमता एवं विशिष्टता को पहचानते हुए उनके संरक्षण, संवर्धन तथा विकास के माध्यम से जिलों को एक मजबूत सांस्कृतिक और आर्थिक पहचान प्रदान करना है।

इस कार्यक्रम के तहत हर जिले में पंच-गौरव के रूप में एक उत्पाद, एक उपज, एक वनस्पति प्रजाति, एक खेल और एक पर्यटन स्थल चिह्नित किया गया है। यह पहल जिलों की विरासत एवं पर्यावरण के संरक्षण में सहायक होगी और इससे आर्थिक उन्नति तथा रोजगार के नए अवसर सृजित होंगे।

मुझे विश्वास है कि पंच-गौरव कार्यक्रम से आमजन के लिए स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर कौशल उन्नयन, उत्पादकता में वृद्धि एवं विभिन्न क्षेत्रों के मध्य स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की भावना उत्पन्न करने में मदद मिलेगी। साथ ही हमारे संयुक्त प्रयासों से विकसित राजस्थान का सपना भी साकार होगा।

जिले में पंच-गौरव कार्यक्रम अपने उद्देश्यों को हासिल करने में सफल हो, इसके लिए मैं अपनी हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं !

(भजनलाल शर्मा)



विजय सिंह

राज्यमंत्री

राजस्व, उपनिवेशन एवं सैनिक कल्याण विभाग,
राजस्थान सरकार

संदेश



राज्य के सर्वांगीण विकास को दृष्टिगत रखते हुए प्रत्येक जिले की क्षमता एवं क्षेत्र विशेष में विशिष्टता के आधार पर उत्पादों/स्थलों का चयन कर उसके संरक्षण, संवर्धन एवं विकास के माध्यम से जिलों को एक मजबूत सांस्कृतिक एवं आर्थिक पहचान दिये जाने तथा सर्वांगीण विकास हेतु राज्य में "पंच-गौरव" कार्यक्रम शुरू किया गया हैं।

कोटपूतली-बहरोड़ में "पंच-गौरव" के रूप में एक जिला-एक उत्पाद ऑटोमोबाईल पार्ट्स एक जिला-एक उपज गाजर, एक जिला एक वनस्पति प्रजाति गूगल, एक जिला-एक खेल कुश्ती एवं एक जिला-एक पर्यटन स्थल बैराठ चिह्नित किये गए हैं।

"पंच-गौरव" की महत्ता से आमजन को जानकारी करवाने के साथ-साथ स्थानीय क्षमताओं का संवर्धन खेलों के माध्यम से स्वारथ्य में सुधार, उत्पादों की गुणवता एवं विपणन क्षमताओं में सुधार के प्रयास कर जिले को विशिष्ट पहचान प्रदान की जानी हैं।

मुझे आशा हैं कि यह विवरणिका जिले के पंच गौरव की कार्ययोजना से आमजन को जानकारी प्रदान करने एवं भागीदारी में सहायक सिद्ध होगी।

शुभकामनाओं सहित ।

(विजय सिंह)



कल्पना अग्रवाल

जिला कलक्टर
कोटपूतली-बहरोड़

संदेश

राज्य सरकार द्वारा स्थानीय विशेषताओं, समुदाय की भागीदारी, विकासात्मक दृष्टिकोण एवं स्थानीय युवाओं / लोगों को प्रशिक्षण और जानकारी उपलब्ध करवाने की दिशा में महत्वपूर्ण पहल करते हुए राज्य को समृद्ध एवं विकसित बनाने की दिशा में पंच गौरव कार्यक्रम शुरू किया गया हैं।

कोटपूतली-बहरोड के पंच गौरव ऑटोमोबाईल पार्ट्स, गाजर, गूगल, कुश्ती एवं बैराठ की महत्ता उपयोगिता एवं आवश्यकता से आमजन को परिचित करवाने के साथ-साथ स्थानीय क्षमताओं का संवर्धन, खेलों के माध्यम से स्वास्थ्य में सुधार, उत्पादों की गुणवता एवं विपणन क्षमता में सुधार कर जिले को राज्य में विशिष्ट पहचान दिलाना हमारी प्राथमिकता है।

मुझे आशा है कि यह विवरणिका जिले के पंच गौरव की कार्ययोजना से आमजन को अवगत करवाने एवं उनकी भागीदारी सुनिश्चित कराने में सहायक सिद्ध होगी।

शुभकामनाओं सहित।

(कल्पना अग्रवाल)

विषय सूची

1. प्रस्तावना
2. कार्यक्रम के उद्देश्य
3. एक ज़िला एक उपज
4. एक ज़िला एक खेल
5. एक ज़िला एक उत्पाद
6. एक ज़िला एक पर्यटन स्थल
7. एक ज़िला एक वनस्पति प्रजाति



प्रस्तावना

हमारे जिले की अनूठी भौगोलिक संरचनाए सांस्कृतिक विविधताए पारंपरिक कला और कारीगरी तथा विशेष प्रकार की कृषि और वनस्पति की उपज ने इसे एक विशिष्ट पहचान दिलाई है। यहां की विरासत और पारिस्थितिकी की हमें अपनी पहचान पर गर्व करने का अवसर देती है। जिले में विभिन्न प्रकार के हस्तशिल्प उद्योग, कृषि और खनिज संसाधन हैं जो न केवल क्षेत्रीय बल्कि राष्ट्रीय हमारे जिले की अनूठी भौगोलिक संरचनाए सांस्कृतिक विविधताए पारंपरिक कला और कारीगरी तथा विशेष प्रकार की कृषि और वनस्पति की उपज ने इसे एक विशिष्ट पहचान दिलाई है। यहां की विरासत और पारिस्थितिकी हमें अपनी पहचान पर गर्व करने का अवसर देती है। जिले में विभिन्न प्रकार के हस्तशिल्प उद्योग कृषि और खनिज संसाधन हैं जो न केवल क्षेत्रीय बल्कि राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी महत्वपूर्ण हैं। राज्य सरकार द्वारा शुरू किए गए 'पंच गौरव' कार्यक्रम के तहत हमारे जिले की विशिष्टताओं को संरक्षित करने और उन्हें और बढ़ावा देने के लिए एक समर्पित कार्य योजना बनाई जाएगी। इस कार्यक्रम के माध्यम से हमारे जिले को एक मजबूत सांस्कृतिक और आर्थिक पहचान मिलने की संभावना है। इस पुस्तक में जिले के पंच गौरव तत्वों को ध्यान में रखते हुए चयनित किए गए प्रमुख उत्पादों उपजों वनस्पतियों, खेलों और पर्यटन स्थलों का विवरण दिया गया है। इसके माध्यम से जिले की ऐतिहासिक सांस्कृतिक और पारिस्थितिकीय धरोहर का संरक्षण और विकास सुनिश्चित करेगा साथ ही साथ रोजगार के अवसरों में भी वृद्धि करेगा जो अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी महत्वपूर्ण हैं।

राज्य सरकार द्वारा शुरू किए गए 'पंच गौरव' कार्यक्रम के तहत हमारे जिले की विशिष्टताओं को संरक्षित करने और उन्हें और बढ़ावा देने के लिए एक समर्पित कार्ययोजना बनाई जाएगी। इस कार्यक्रम के माध्यम से हमारे जिले को एक मजबूत सांस्कृतिक और आर्थिक पहचान मिलने की संभावना है।

इस पुस्तक में जिले के पंच गौरव तत्वों को ध्यान में रखते हुए चयनित किए गए प्रमुख उत्पादों उपजों वनस्पतियों, खेलों और पर्यटन स्थलों का विवरण दिया गया है। इसके माध्यम से जिले की ऐतिहासिक सांस्कृतिक और पारिस्थितिकीय धरोहर का संरक्षण और विकास सुनिश्चित करेगा, साथ ही साथ रोजगार के अवसरों में भी वृद्धि करेगा।

हमारे जिले की अनूठी पहचान और सामर्थ्य को बढ़ावा देने के उद्देश्य से इस पुस्तक में दी गई जानकारी जिले के सर्वांगीण विकास में सहायक सिद्ध होगी। साथ ही 'पंच गौरव' के तहत चयनित तत्वों के संवर्धन से जिले को न केवल सांस्कृतिक दृष्टि से बल मिलेगा बल्कि आर्थिक दृष्टि से भी विकास के नए मार्ग खुलेंगे। यह पुस्तक जिले के ऐतिहासिक गौरव और भविष्य के विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम के रूप में कार्य करेगी जिससे स्थानीय निवासियों को गर्व होगा और समग्र रूप से जिले की समृद्धि में वृद्धि होगी।

कार्यक्रम के उद्देश्य

- जिले की आर्थिक, पारिस्थितिकी एवं ऐतिहासिक धरोहरों का संरक्षण और संवर्धन।
- स्थानीय शिल्प एवं उत्पादक कला को संरक्षण प्रदान करना एवं उत्पादों की गुणवता, विपणन क्षमता में सुधार एवं निर्यात में वृद्धि करना।
- स्थानीय क्षमताओं का संवर्धन कर जिलों में स्थानीय रोजगार को बढ़ाकर जिले से प्रवास को रोकना।
- जिलों के मध्य स्वस्थ प्रतिस्पर्धा विकसित करना।
- प्रमुख वनस्पति प्रजातियों का संरक्षण एवं इनके वैज्ञानिक व व्यावसायिक प्रयोगों को बढ़ावा देना।
- खेलों के विकास के माध्यम से स्वास्थ्य में सुधार, रोजगार तथा पहचान सुजित करना।
- ऐतिहासिक, धार्मिक एवं पर्यटन की दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थलों का संरक्षण करना एवं इन स्थलों पर वैश्विक स्तर की आधारभूत सुविधाएं विकसित करना।
- सभी जिलों में समान विकास को बढ़ावा देकर क्षेत्रीय विषमताओं असंतुलन को कम करना।

एक पेड़ मां के नाम





एक जिला एक उपज
गाजर

गाजर (Daucus Carata) सर्द क्रतु में उगाई जाने वाली एक महत्वपूर्ण जड़ वाली सब्जी की फसल है जो पूरे देश में उगायी जाती है। इसका उपयोग सलाद, ज्यूस, अचार, हलवा, सब्जी इत्यादि बनाने के लिये भी किया जाता है। गाजर की मुलायम पत्तियों का उपयोग सब्जी बनाने के लिये भी किया जाता है। इसकी नारंगी वाली किस्मों में विटामिन कैरोटिन की मात्रा अधिक होती है जो कि कई औषधीय गुणों से युक्त होती है। गाजर में विटामिन ए, बीटा कैरोटिन, कैल्सियम, फाइबर एंव एन्टीऑक्सीडेंट्स होते हैं जो स्वास्थ्य के लिये अत्यन्त फायदेबन्द होते हैं। यह आंखों की रोशनी बढ़ाने पाचन को सुधारने और प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने में सहायक होती है।



जिले में गाजर की पैदावार

कोटपूतली.बहरोड़ जिले में गाजर की खेती किसानों के लिए मुनाफे का सौदा साबित हो रही है जहां किसान इसे व्यवसायिक फसल के रूप में उगाते हैं। जिले में गाजर का उत्पादन कुल क्षेत्रफल 5 हजार 650 हेक्टेयर किया जाता है। जिले में मुख्यतः कोटपूतली, बहरोड़ व बानस्सूर पंचायत समिति में गाजर की खेती होती है तथा इसका विपणन किसान कोटपूतली, बर्डोद, बहरोड़, खेरथल व आजादपुर मंडी दिल्ली में करते हैं। गाजर की खेती सही विधियों के साथ की जाये तो यह न केवल किसानों के लिये एक मुनाफे वाली फसल साबित हो सकती है बल्कि उपभोक्ताओं के लिये भी एक उच्च पोषक सब्जी होती है।

भूमि एंव जलवायु

गाजर का नारंगी रंग तथा आकार तापक्रम से अत्यधिक प्रभावित होता है, गाजर में रंग एंव विकास की वृद्धि के लिये 15 से 25 डिग्री सेन्टीग्रेड तापमान उपयुक्त पाया गया है। अधिक तापमान पर जड़ें छोटी मोटी और रसहीन हो जाती हैं।

गाजर के सफल उत्पादन के लिये उचित जल निकास वाली बलुई दोमट वाली मृदा जो कि जीवांश पदार्थों से युक्त हो उत्तम मानी गयी है। बेहतर उत्पादन हेतु मृदा का पी.एच.स्टर 6.0 - 7.5 के मध्य होना सर्वोत्तम होता है।

उन्नत किस्में

- **पूसा केसर** जड़ें लम्बी व हल्के लाल रंग वाली होती है जिसकी बुवाई अगस्त से सितम्बर तक की जाती है। फसल 90-110 दिन में तैयार हो जाती है एवं उपज 200-250 किंविटल प्रति हैक्टर होती है।
- **पुसा रुधिरा** जड़ें मध्यम लम्बाई की व लाल रंग के वित वाली त्रिकोण आकार की होती है जिसकी बुवाई मध्य सितम्बर से अक्टूबर तक की जाती है। इसकी उपज 300 किंविटल प्रति हैक्टर होती है।
- **पुसा मेघाली** यह नारंगी रंग वाली एवं जड़ें लम्बी व हल्के लाल रंग वाली होती हैं जिसकी बुवाई अगस्त से सितम्बर तक की जाती है। फसल 90-110 दिन में तैयार हो जाती है एवं उपज 200-250 किंविटल प्रति हैक्टर होती है।
- **नैन्टीस** यह नारंगी रंग वाली बेलनाकार वाली होती है जिसकी बुवाई अक्टूबर से दिसम्बर तक की जाती है। इसकी उपज 100-125 किंविटल प्रति हैक्टर होती है।
- **पुसा वृष्टि** यह किस्म उष्ण सहनशील है। यह किस्म अगेती बुवाई (जुलाई) के लिये उपयुक्त है। फसल 80-90 दिन में तैयार हो जाती है एवं उपज 250 किंविटल प्रति हैक्टर होती है।

बुवाई का समय एवं बीज दर

एशियाई किस्मों की बुवाई अगस्त से अक्टूबर तक एवं यूरोपियन किस्मों की बुवाई अक्टूबर से नवम्बर तक की जाती है। नियमित आपूर्ति के लिये बुवाई हर 15 से 20 दिन के अन्तराल पर करनी चाहिए। एक हैक्टेयर क्षेत्रफल के लिये 6-8 किलोग्राम बीज पर्याप्त होता है।



बुवाई की विधि

जड़ों के अच्छे विकास के लिये गाजर की बुवाई सामान्यत उठी हुयी डोलियों पर करते हैं। दो डोलियों के आपस की दूरी 30-45 सेमी रखते हैं। तैयार डोलियों पर बीजों की बुवाई 2-3 सेमी की गहराई पर करते हैं। एक महिने के पश्चात बीजों का अच्छा जमाव होने पर पौधों की थिनिंग कर उनके मध्य में 8-10 सेमी. की दूरी बना देनी चाहिए जिससे जड़ों का विकास अच्छा हो सके।

खाद एंव उर्वरक

खेती करते समय 15 से 20 टन अच्छी तरह सड़ी हुयी गोबर की खाद मिट्टी में मिला देनी चाहिए, इसके अलावा 60 किलोग्राम नाइट्रोजन, 40 किलोग्राम फॉसफोरस एवं 40 किलोग्राम पोटाश भी प्रति हैक्टर की दर से खेत में डालना चाहिए। नाइट्रोजन की आधी मात्रा तथा फॉसफोरस व पोटाश की पूरी मात्रा खेत तैयार करते समय ही मिला देनी चाहिए तथा शेष बची नाइट्रोजन की मात्रा को बुवाई के लगभग एक महीना पश्चात् छिड़काव विधि से उपयुक्त प्रक्रिया से देना चाहिए।

सिंचाई

बुवाई के समय खेत में पर्याप्त नमी होनी चाहिए। पहली सिंचाई बीज उगने के बाद करें। शुरू में 8 - 10 दिन के अन्तर पर तथा बाद में 12 - 15 दिन के अंतर पर सिंचाई करने की सलाह दी जाती है।

खाद एंव उर्वरक

गाजर की फसल में कीड़ों का प्रकोप कम होता है जिससे कीट नियंत्रण की जरूरत नहीं पड़ती है। फसल में सफेद हल्के चूर्ण का प्रकोप होने पर 2.5 किलोग्राम घुलनशील गंधक को 600 लीटर पानी में मिलाकर प्रति हैक्टेयर की दर से छिड़काव करें। सर्कोस्पोरा पर्ण अंगमारी रेग से पत्तियों पर धूसर, भूरे या काले रंग के धब्बे होने पर 3 किलोग्राम कॉपर आक्सीक्लोराइड या क्लोरोथीलोनिल 2 किलोग्राम का एक हजार लीटर पानी में घोल बनाकर प्रति हैक्टर की दर से छिड़काव करना होता है।



उपज

बुवाई से लगभग ढाई से तीन महिने बाद गाजर जमीन से निकालने के लिये तैयार हो जाती है। खुदाई से पहले खेत में पर्याप्त नमी होनी चाहिए। खुदाई करने के पश्चात् जड़ों को धोकर साफ कर लेना चाहिए।

एक जिला एक खेल कुश्ती



एक जिला एक खेल : कुश्ती

कुश्ती एक प्राचीन ओलंपिक खेल है, जिसमें भारत ने सर्वाधिक मेडल जीते हैं। यह खेल पुरुषों के साथ साथ महिलाओं के बीच भी खेला जाता है। महिलाओं के लिए केवल फ्री स्टाइल कुश्ती होती है, जबकि पुरुष वर्ग में फ्री स्टाइल और ग्रीको - रोमन दोनों प्रकार की कुश्ती होती है।



कुश्ती न केवल एक खेल है, बल्कि आत्मरक्षा के लिए भी यह महत्वपूर्ण है। भारत में कुश्ती के प्रमुख खिलाड़ी, हरियाणा, दिल्ली, पंजाब, उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र और राजस्थान जैसे राज्यों से है। कुश्ती भारत में एक लोकप्रिय खेल है विशेषकर कोटपूतली बहरोड़ क्षेत्र में जहां इस खेल के प्रति जनमानस की गहरी रुचि है आज भी ग्रामीण क्षेत्रों में मिट्टी के अखाड़े



चलाये जा रहे हैं एवं मेले एवं अन्य त्योहारों पर विभिन्न स्थानों पर दंगल प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है।

एक जिला एक उत्पाद

ऑटो पार्ट्स



एक जिला एक उत्पाद : ऑटोपार्ट्स

कोटपूतली-बहरोड़ जिले में एक जिला-एक उत्पाद के रूप में ऑटोपार्ट्स का चयन किया गया है। जिले में नीमराना, धीलोठ शाहजहांपुर, बहरोड़, सोतानाला, केशवाना, औद्योगिक क्षेत्र में लगभग 120 ऑटोकम्पोनेंट की इकाईयाँ उत्पादन से जुड़ी हुई हैं। इन इकाईयों से लगभग 20 हजार लोगों को रोजगार दिया जा रहा है।



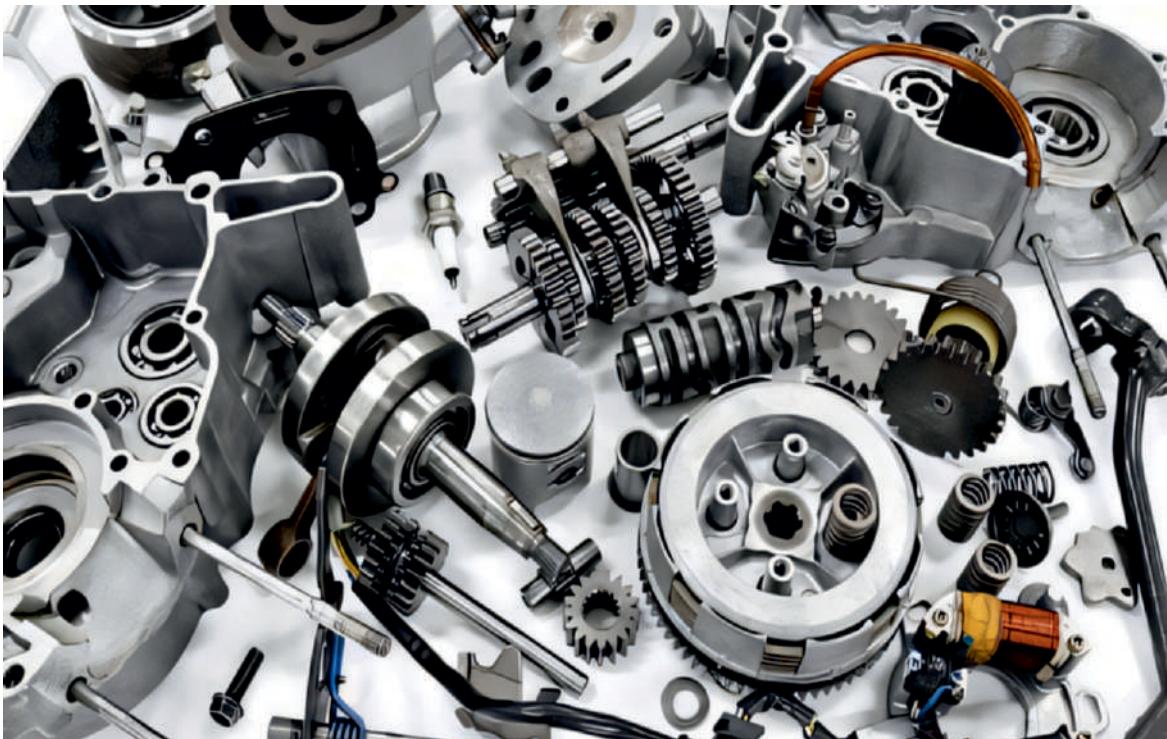
ऑटोपार्ट्स का निर्माण

ऑटोपार्ट्स इकाईयों द्वारा टू-व्हीलर व पार्ट्स, ब्रेक, डोरट्रीम, कारस्पेयर पार्ट्स, ईपीडीएममैट्स, फ्यूल पंप कंपोनेन्ट्स हाइड्रोलिक पंप, एल्यूमिनियम कास्टिंग, साइडकवर, गियर बूसेज, हाइड्रोलिक गियरपंप, ऑटोमेटिकगियर/पिन/बुसेज/क्लच कंपोनेंट, सीएनसी कंपोनेंट, एमएस कास्टिंग, ब्रेकपेड, एक्जास्टर पाईप, मैटलपाईप, एयर कम्प्रेशर पार्ट्स एवं अन्य विभिन्न प्रकार के ऑटोपार्ट्स का निर्माण किया जाता है।

उत्पादन से जुड़ी इकाइयाँ

कोटपूतली-बहरोड़ जिले में मुख्य रूप से हीरो मोटोकॉर्प लि., मिस्तसुई प्राईम एंडवांस कम्पोजीट इंडिया प्रा. लि., निसिन ब्रेकइंडिया प्रा. लि., टीएस टैक्सैन राजस्थान प्रा. लि., वाईटैक इंडिया प्रा. लि., एलपी ओवरसीज, जेएसएस ऑटोमोबाइल्स हिटाची एस्टीमो,

एसआरआई गोटेक इंडिया प्रा. लि. एवंट्रांस एसएनआर. प्रा. लि. इत्यादि इकाइयाँ ऑटोकम्पोनेट का उत्पादन कर रही है। इन इकाइयों द्वारा मुख्य रूप से संयुक्त राज्य अमेरिका, यू.के., यू.ए.ई., जापान, जर्मनी, रूस इत्यादि देशों में निर्यात किया जा रहा है।



ओडीओपी पालिसी 2024 में औटोपार्ट्स उत्पाद को मिलेगा प्रोत्साहन

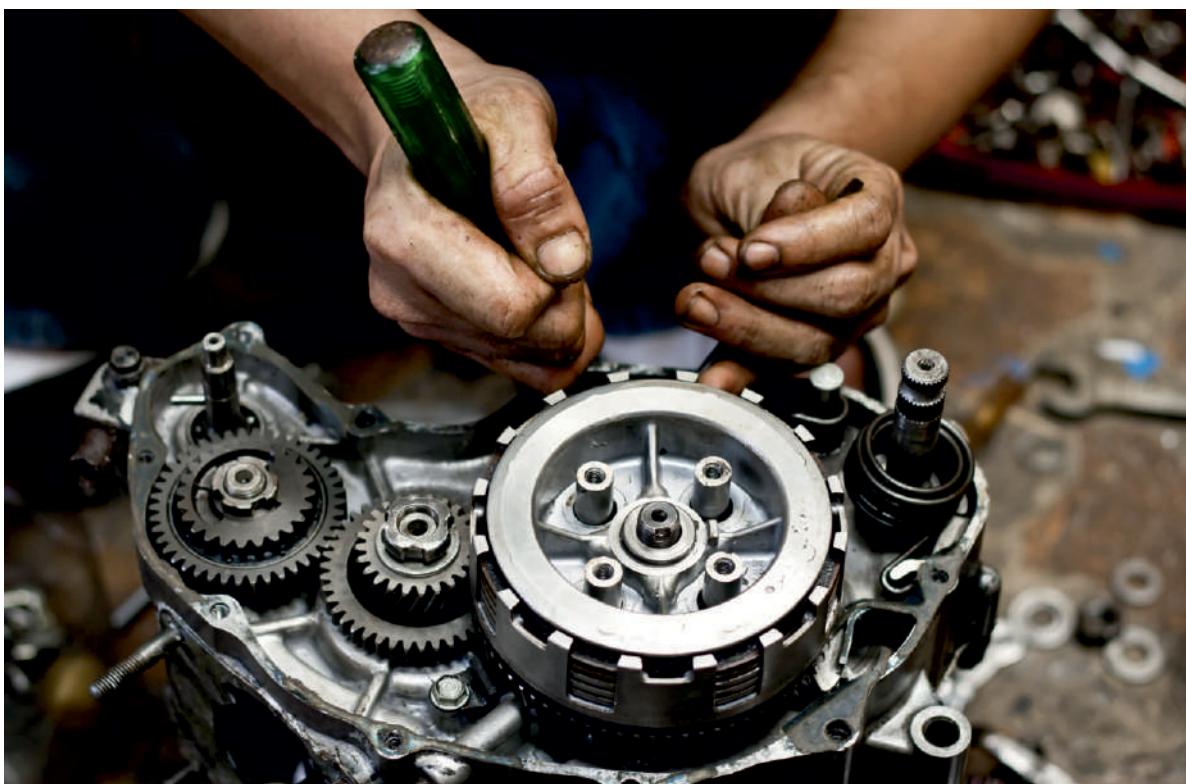
- ओडीओपी उत्पाद के लिए प्रत्येक जिले को निर्यात हब के रूप में विकसित करना।
- ओडीओपी उत्पाद की गुणवत्ता, डिजाईन एवं विपणन में सुधार लाना।
- ओडीओपी से संबद्ध दस्तकार/हस्तशिल्पी/कृषक/उत्पादकों हेतु रोजगार सृजन कौशल प्रशिक्षण, निर्यात समर्थन तथा हैण्डहोल्डिंग सपोर्ट प्रदान करना।
- नीति की परिचालन अवधि :- योजना दिनांक 31 मार्च 2029 तक प्रभावी रहेगी।

नीति के तहत देय सहायता एवं सुविधाएं

- नवीन ओडीओपी उद्यम हेत मार्जिन मनी अनुदान (ऋण लेने पर) दिया जाता है

- सुक्ष्म (माइक्रो) उद्यम-परियोजना लागत का 25 प्रतिशत या अधिकतम रु .15 लाख
- लघु (स्मॉल) उद्यम-परियोजना लागत का 15 प्रतिशत या अधिकतम 20 लाख
- एससी/एसटी/महिला/दिव्यांग/35 वर्ष से कम आयु के युवा उद्यमीयों को नवीन
- सूक्ष्म अथवा लघु ओडीओपी उद्यम की स्थापना पर अधिकतम रु 5 लाख तक अतिरिक्त लाभ देय है
- नवीनतम तकनीक / सॉफ्टवेयर अभिग्रहणपर –कुल अभिग्रहण लागत का 50 प्रतिशत या अधिकतम
- रु. 5 लाख तक की वित्तीय सहायता
- गुणवत्ता प्रमाणन सहायता-कुल लागत का 75 प्रतिशत या अधिकतम रु. 3 लाख तक एक बारीय पुनर्भरण

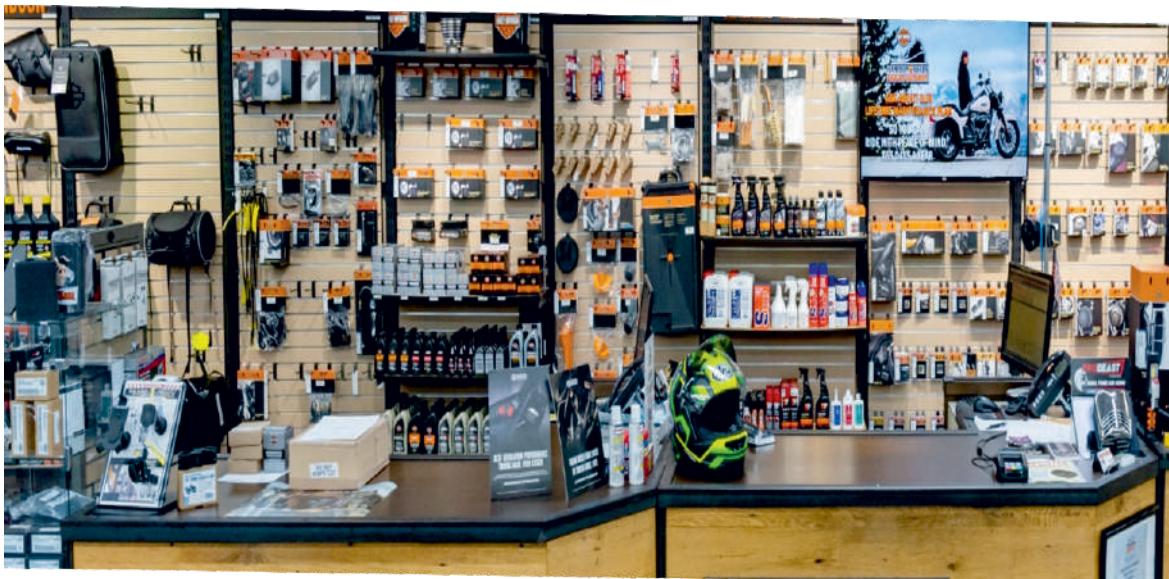
मार्केटिंग हेतु वित्तीय सहायता



- राज्य में आयोजित राष्ट्रीय/अन्तराष्ट्रीय मेलों तथा प्रदर्शनी में भाग लेने पर

- स्टॉल किराये का 75 प्रतिशत या अधिकतम रु. 50 हजार तक पुर्नभरण
- बस(एसी)/रेल(एसी-3)का किराया
- राज्य के बाहर देश में आयोजित राष्ट्रीय/अन्तराष्ट्रीय
- मेलों तथा प्रदर्शनी में भाग लेने पर
- स्टॉल किराये का 75 प्रतिशत या अधिकतम रु. 1.50 लाख तक पुर्नभरण

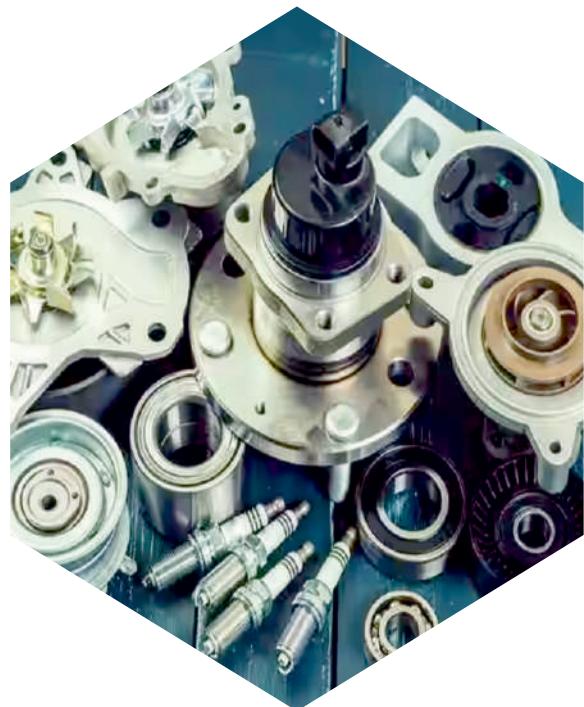
- विदेश में आयोजित मेलों तथा प्रदर्शनी में भाग लेने पर
- स्टॉल किराये का 75 प्रतिशत या अधिकतम रु. 2 लाख तक पुर्नभरण
- हवाई यात्रा का किराया
- ई-कॉमर्स हेतु प्रोत्साहन
- ई-कॉमर्स प्लेटफार्म द्वारा वसूली गई फीस/कमीशन का 75 प्रतिशत या अधिकतम 1 लाख तक पुर्नभरण
- ई-कॉमर्स वेबसाइट का विकास या केटेलॉगिंग सर्विस हेतु व्यय का 60 प्रतिशत या अधिकतम 75 हजार एक बारीय सहायता



अन्य प्रावधान

- कौशल विकास हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रम
- दस्तकारों/हस्तशिल्पियों/उद्यमियों को पैकेजिंग प्रशिक्षण
- राजस्थान ओडीओपी एक्सपों का आयोजन
- पीएम एकता मॉल एवं ओडीओपी डिस्प्लेवॉल्स के माध्यम से ओडीओपी उत्पादों का प्रचार
- विपणन एवं निर्यात एक्सीलैंस केन्द्र की स्थापना
- ब्राण्ड राजस्थान पहल

रिप्स- 2024 के तहत अन्य सुविधाएं



एक जिला-एक पर्यटन स्थल
बैराठ



एक जिला-एक पर्यटन स्थल: बैराठ

एक जिला-एक पर्यटन स्थल: बैराठ

बैराठ कोटपूतली-बहरोड क्षेत्र का प्राचीनतम स्थल है, जिसका उल्लेख पौराणिक कथाओं में कई बार मिलता है। यह स्थान कभी मत्स्य साम्राज्य की राजधानी हुआ करता था और मौर्य वंश के सम्राट अशोक के नाम के शिलालेख यहां पाए गए हैं।



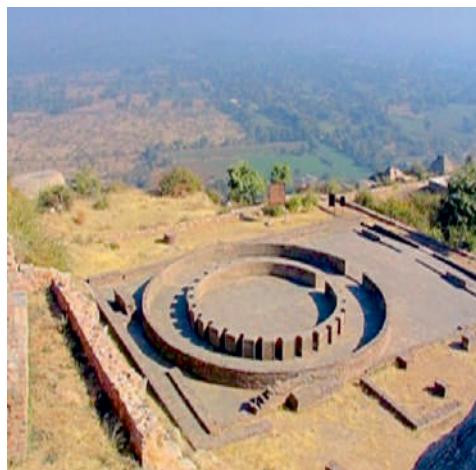
बैराठ के ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व को ध्यान में रखते हुए इसे पर्यटन स्थल के रूप में विकसित करने के लिए इसे 'एक जिला एक पर्यटन स्थल' में शामिल किया गया है।

स्वदेश दर्शन योजना के तहत पर्यटन विकास

भारत सरकार के पर्यटन मंत्रालय द्वारा केन्द्रीय प्रवर्तित योजनाओं के अंतर्गत 'स्वदेश दर्शन योजना' का संचालन किया जा रहा है। इस योजना के तहत बैराठ को आध्यात्मिक सर्किट के हिस्से के रूप में विकसित किया जा रहा है। इस योजना के तहत, विराट नगर में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए 8.01 करोड़ रुपए की राशि से वृहद स्तर पर पर्यटन विकास कार्य करवाए गए हैं।

इनमें प्रमुख कार्यों में पर्यटन सुविधाओं का विस्तार, इंफ्रास्ट्रक्चर में सुधार और स्थल की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित करने के लिए विभिन्न कदम उठाए गए हैं।

विभाग द्वारा राज्य योजनान्तर्गत वर्ष 2017-18 में 50 लाख रुपए की राशि से विराटनगर के मैन बाजार स्थित प्राचीन टकसाल का जीर्णोद्धार कार्य किया गया। इसके अतिरिक्त, पार्किंग, साइनज, और अन्य बुनियादी सुविधाओं का विकास किया गया, जिससे पर्यटकों के लिए स्थल पर यात्रा करना और भी आरामदायक हो गया है।

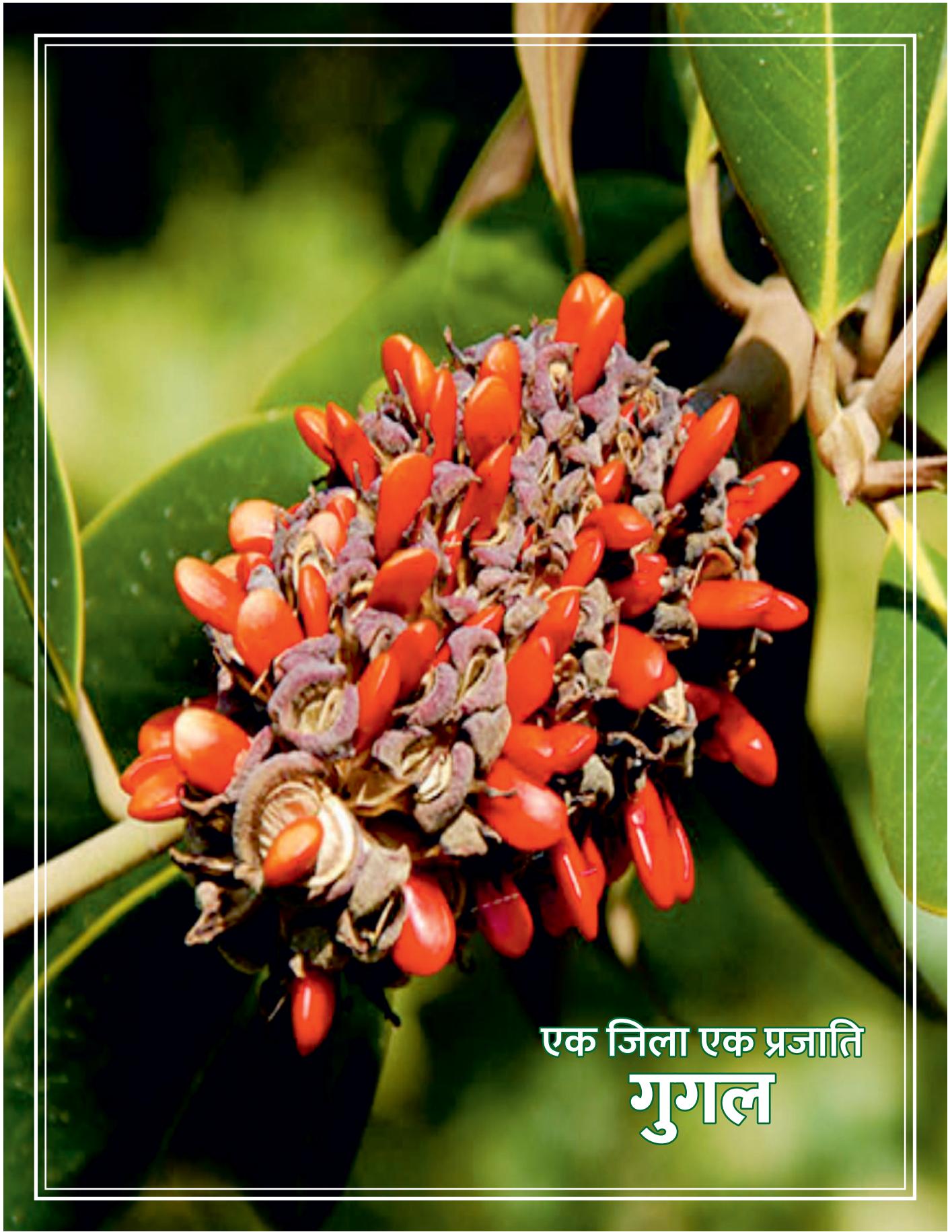


पर्यटकों के लिए सुविधाएं

बैराठ में पर्यटकों की बढ़ती संख्या को ध्यान में रखते हुए, यहां पीने के पानी और शौच की सुविधाएं प्रदान की गई हैं। बैराठ के विभिन्न स्थानों पर वाटर कूलर (आर.ओ.) और टॉयलेट्स स्थापित किए गए हैं।

पंचगौरव से संबंधित योजनाओं का विकास

केन्द्र और राज्य सरकार द्वारा बैराठ के विकास के लिए पंचगौरव योजना के तहत कई योजनाएं बनाई गई हैं। विशेष रूप से, 2024-25 के बजट में माननीय उप मुख्यमंत्री (वित्त) महोदया द्वारा 16 जुलाई 2024 को की गई बजट घोषणा के अंतर्गत "नसियां जी विराटनगर-कोटपूतली-बहरोड" क्षेत्र में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए विकास कार्य किए जाने की घोषणा की गई है। इस घोषणा से बैराठ के पर्यटन क्षेत्र को और अधिक बढ़ावा मिलेगा।



एक जिला एक प्रजाति
गुगल

एक जिला – एक वनस्पति प्रजाति : गूगल

गूगल एक औषधीय पौधा है। इसके पत्ते छोटे और एकांतर सरल होते हैं। इसके तने को काटने से गोंद निकलता है, जिसका उपयोग भारत में हर्बल दवाओं एवं अन्य स्वास्थ लाभ के लिए उपयोग में लिया जाता है।



गूगल की जिले में उपलब्धता:

यह मुख्य रूप से विराटनगर के मेड, नीलका, आंतेला, कोटपुतली के बुचारा, सुदरपुरा ढाढ़ा के जंगल में पाया जाता है।



गूगल के फायदे



- त्वचा रोगों का इलाज
- एसिडिटी कम करने में मददगार
- बैड कोलेस्ट्रोल को कम करना
- पारम्परिक उपयोग : अगरबत्ती, धूप बत्ती बनाने में, वार्निश मलहम, इत्र दवाओं में आधुनिक उपयोग – तंत्रिका रोग, कुष्ठ रोग, नसों का दर्द, नेत्र रोग पायरिया, त्वचा विकार उच्च रक्त चाप और मूत्र सम्बन्धित विकार



- **संरक्षक:** श्रीमती कल्पना अग्रवाल, जिला कलक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट, कोटपूतली-बहरोड़
- **संपादक:** श्री ओमप्रकाश सहारण, अतिरिक्त जिला कलक्टर, कोटपूतली-बहरोड़
- **सह-संपादक:** श्री बाबूलाल बैरवा, ब्लॉक सांख्यिकी अधिकारी, कोटपूतली-बहरोड़
श्री राहुल आसीवाल, सहायक जनसम्पर्क अधिकारी, कोटपूतली-बहरोड़
- **प्रकाशक:** जिला प्रशासन एवं आर्थिक एवं सांख्यिकी विभाग, कोटपूतली-बहरोड़
- **मुद्रक:** गुर्जर फ्लैक्स, कोटपूतली





आर्थिक एवं सांख्यिकी विभाग, राजस्थान

#हर_घर_खुशहाली

#आपणों_अग्रणी_राजस्थान